

○ 08 / 01 / 22 की मुरली से चार्ट ○

⇒ TOTAL MARKS:- 100 ⇐

]] 1]] होमवर्क (Marks: 5*4=20)

- >> *स्वदर्शन चक्रधारी बनकर रहे ?*
- >> *रूहानियत द्वारा वृत्ति, दृष्टि, बोल और कर्म को रॉयल बनाया ?*
- >> *मेहनत की बजाये मुहब्बत के झूले में झूलते रहे ?*
- >> *आपके अन्दर बाप का स्नेह इमर्ज रहा ?*

◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °
☆ *अव्यक्त पालना का रिटर्न* ☆
☼ *तपस्वी जीवन* ☼
◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

~◇ जितना अव्यक्त लाइट रूप में स्थित होंगे, उतना शरीर से परे का अभ्यास होने के कारण यदि दो-चार मिनट भी अशरीरी बन जायेंगे, तो मानों जैसे कि चार घण्टे का आराम कर लिया। *ऐसा समय आयेगा जो नींद के बजाए चार-पाँच मिनट अशरीरी बन जायेंगे और शरीर को आराम मिल जायेगा। लाइट स्वरूप के स्मृति को मजबूत करने से हिसाब-किताब चुक्त करने में भी लाइट रूप हो जायेंगे।*

◇ ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° ° ● ☆ ● ◇ ° °

॥ 2 ॥ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➤➤ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

◊°° ●☆●◊°° ●☆●◊°° ●☆●◊°°

◊°° ●☆●◊°° ●☆●◊°° ●☆●◊°°

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

☼ *श्रेष्ठ स्वमान* ☼

◊°° ●☆●◊°° ●☆●◊°° ●☆●◊°°

☼ *"मैं स्वदर्शन चक्रधारी सफलता मूर्त आत्मा हूँ"*

~◊ सभी अपने को स्वदर्शन चक्रधारी समझते हो, बाप की जितनी महिमा है, उसी महिमा स्वरूप बने हो? *जैसे बाप के हर कर्म चरित्र के रूप अभी भी गाये जाते हैं ऐसे आपके भी हर कर्म चरित्र समान हो रहे हैं? ऐसे चरित्रवान बने हो, कभी साधारण कर्म तो नहीं होते हैं?*

~◊ *जो बाप के समान स्वदर्शन चक्रधारी बने हैं उनसे कभी भी साधारण कर्म हो नहीं सकते। जो भी कार्य करेंगे उसमें सफलता समाई हुई होगी। सफलता होगी या नहीं होगी, यह संकल्प भी नहीं उठ सकता। निश्चय होगा- सफलता हुई पड़ी है।*

~◊ *स्वदर्शन चक्रधारी मायाजीत होंगे। मायाजीत होने के कारण सफलतामूर्त होंगे। और जो सफलतामूर्त होंगे वह सदा हर कदम में पद्मापद्मपति होंगे।* ऐसे पद्मापद्मपति अनुभव करते हो? इतनी कमाई जमा कर ली है जो 21 जन्मों तक चलती रहे सूर्यवंशी अर्थात् 21 जन्मों के लिए जमा करने वाले। तो सदा हर सेकेण्ड में जमा करते रहो।

◊°° ●☆●◊°° ●☆●◊°° ●☆●◊°°

॥ 3 ॥ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➤➤ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

◊°°●☆●◊°°●☆●◊°°●☆●◊°°

◊°°●☆●◊°°●☆●◊°°●☆●◊°°

☉ *रूहानी ड्रिल प्रति* ☉

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

◊°°●☆●◊°°●☆●◊°°●☆●◊°°

~◊ जो एक सेकण्ड में अपने संकल्प को जहाँ चाहे, जो सोचना चाहे वही सोच चलता रहे, ऐसे जो समझते हैं, वह हाथ उठाओ। *एक सेकण्ड में माइण्ड कन्ट्रोल हो जाए, ऐसे सेकण्ड में हो सकता है?* अगर कर सकते हो तो हाथ उठाओ।

~◊ ऐसे कहने से नहीं, अगर कन्ट्रोल होता है तो हाथ उठाओ? अच्छा जिन्होंने नहीं हाथ उठाया उन्हीं को क्या एक मिनट लगता है? या उससे भी ज्यादा लगता है? *अभी यह अभ्यास बहुत जरूरी है क्योंकि अंत के समय यह अभ्यास बहुत काम में आयेगा।*

~◊ जैसे इस शरीर के आरगन्स को, बाँह है, पाँव है, इनको सेकण्ड में जहाँ लेकर जाने चाहो वहाँ ले जा सकते हो ना! ऐसे मन-बुद्धि को भी मेरी कहते हो ना। *जब मन के मालिक हो, यह सूक्ष्म आरगन्स हैं, तो इसके ऊपर कन्ट्रोल क्यों नहीं?*

◊°°●☆●◊°°●☆●◊°°●☆●◊°°

॥ 4 ॥ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➤➤ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°°

◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°°

☉ *अशरीरी स्थिति प्रति* ☉

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°°

~◊ *फ़रिश्ते अर्थात् साक्षात्कार कराने वाले।* जैसे अभी गोल्डन जुबली का दृश्य देखा। यह तो एक रमणीक पार्ट बजाया। लेकिन जब फाइनल दृश्य होगा उसमें तो आप साक्षात्कार कराने वाले होंगे या देखने वाले होंगे? क्या होंगे ? हीरो एक्टर हो ना! अभी इमर्ज करो वह दृश्य कैसा होगा। इसी अन्तिम दृश्य के लिए अभी से त्रिकालदर्शी बन देखो कि कैसा सुन्दर दृश्य होगा और कितने सुन्दर हम होंगे। *सजे-सजाये दिव्य गुणमूर्त फ़रिश्ते सो देवता, इसके लिए अभी से अपने को सदा फ़रिश्ते स्वरूप की स्थिति का अभ्यास करते हुए आगे बढ़ते चलो।* जो चार विशेष सब्जेक्ट हैं- ज्ञान मूर्त, निरन्तर यादमूर्त, सर्व दिव्यगुणमूर्त, अथक सेवामूर्त- एक दिव्य गुण की भी कमी होगी तो १६ कला सम्पन्न नहीं कहेंगे। १६ कला, सर्व और सम्पूर्ण यह तीनों महिमा हैं। सर्वगुण सम्पन्न कहते हो, सम्पूर्ण निर्विकारी कहते हो और १६ कला सम्पन्न कहते हो। तीनों विशेषतायें चाहिए। *१६ कला अर्थात् सम्पन्न भी चाहिए, सम्पूर्ण भी चाहिए और सर्व भी चाहिए।* तो यह चेक करो। सुनाया था ना कि यह वर्ष बहुतकाल के हिसाब में जमा होने का है फिर बहुतकाल का हिसाब समाप्त हो जायेगा, फिर थोड़ा काल कहने में आयेगा, बहुतकाल नहीं। *बहुतकाल के पुरुषार्थ की लाइन में आ जाओ। तभी बहुतकाल का राज्य भाग्य प्राप्त करने के अधिकारी बनेंगे।* नहीं तो बहुत काल का राज्य भाग्य बदल कुछ कम राज्य भाग्य प्राप्त होने के अधिकारी बनेंगे।

◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°° ●●☆●●◊°°

॥ 5 ॥ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➤➤ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*



[[6]] बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✽ *"ड्रिल :- रूहानी हॉस्पिटल, यूनिवर्सिटी खोलना"*

➤➤ _ ➤➤ बचपन में आसमानी चाँद देख मचला करते थे...पर पा न सके...क्योकि तब मेरे पास ब्रह्मा मां जो न थी... *आज भाग्य से मिली प्यारी ब्रह्मा मां ने... मुझे प्यारा शिव चाँद हाथो में दे दिया है.*..और मन इस चाँद से हर पल खेल रहा है... ऐसा खुबसूरत भाग्य... मुझ आत्मा का होगा.... यह तो कल्पनाओ में भी न था... इन मीठी यादो में खोयी खोयी मैं आत्मा... मीठे बाबा के कमरे में... अपनी ब्रह्मा माँ और शिव पिता से मिलने पहुंचती हूँ...

✽ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को रूहानी सर्जन बनाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... मीठे बाबा से जो प्यार और ज्ञान की दौलत पायी है.. उसको पूरे विश्व पर दिल खोल कर बरसाओ... इस धरा से दुखो का नामोनिशान मिटाने वाले मा सुख दाता बनकर मुस्कराओ... *जिन सच्ची खुशियो की मचान पर खिलखिला रहे हो.. इन खुशियां को हर दिल का अधिकार बनाओ.*..

➤➤ _ ➤➤ *मैं आत्मा मीठे बाबा से पायी असीम खुशियो को अपनी झोली में भरते हुए कहती हूँ :-* "मीठे दुलारे बाबा मेरे... *आपने मेरा हाथ थामकर मुझे सुखो का सरताज बना दिया है.*. मेरी रूहानी रंगत पर विश्व फिदा हो गया है... मैं आत्मा सुखो का पर्याय बनकर, हर दिल को सुख भरा रास्ता दिखाने वाली, रौशनी बन गयी हूँ..."

✽ *प्यारे बाबा मझ आत्मा को अखट खजानो के मालिक बनाते हुए कहते हैं

:-* "मीठे लाडले प्यारे बच्चे... *ईश्वरीय खुशियो को जितना बांटोगे, उतना धनवान् बन मुस्कराओगे..*. यह ज्ञान धन अखूट है... इसलिए रूहानी सर्जन और प्रोफेसर बनकर, सबको इस रूहानी पढ़ाई से वाकिफ कराओ... सत्य का परिचय देने वाले सच्चे सत्यवान बन मुस्कराओ...

»→ _ »→ *मै आत्मा मीठे बाबा के ज्ञान रत्नों को पाकर कर खुशियो में डूम कर कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... सच्चे ज्ञान से कोसो दूर मै आत्मा... कितनी अनपढ़ सी थी... *आज आपने तीनों लोको का ज्ञान देकर... मुझे प्रोफेसर और सर्जन बना दिया है..* मुझे कुछ भी नहीं से उठाकर, सब कुछ बना दिया है...

* *मीठे बाबा मुझ आत्मा को रूहानी ज्ञान का प्रतिनिधि बनाते हुए कहते हैं :-* "जो कार्य मीठे बाबा ने किया है वही कर्तव्य आप बच्चों का है... *सबको सत्य का परिचय देकर, सच्चे सुखो की अमीरी से भरपूर करो.*.. मीठे बाबा जैसा हर दिल का कल्याण कर... असीम दुआओ और पुण्यो का खाता बढ़ाओ..."

»→ _ »→ *मै आत्मा अपने मीठे मीठे बाबा को बड़े स्नेह से निहारते हुए कहती हूँ :-* "मीठे मीठे बाबा मेरे... आपने विश्व कल्याणकारी बनाकर, मुझे कितना ऊँचा उठा दिया है... *मै आत्मा खुशियो की सौगात लिए, हर दिल आँगन को भरती जा रही हूँ..*. भगवान धरा पर अखूट खजाने बाँट रहा है..यह खबर पूरे विश्व में फैला रही हूँ..."अपने प्यारे बाबा से रुहरिहानं कर मै आत्मा... सृष्टि जगत में लौट आयी...

[[7]] योग अभ्यास (Marks:-10)

(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

* "ड्रिल :- बाप के समीप आने के लिए रूहानी यात्रा पर रहना है*"

»→ »→ स्वयं परम पिता परमात्मा शिव बाबा ने रूहानी पण्डा बन जो

रूहानी यात्रा हम बच्चों को सिखलाई है, उस यात्रा पर रहने के लिए एक दो को सावधानी देते आगे बढ़ना और बढ़ाना ही हम ब्राह्मण बच्चों का कर्तव्य है।

अपने आश्रम में, बाबा के कमरे में बैठी मैं मन ही मन यह विचार करते हुए बाबा का आह्वान करती हूँ और बाबा के साथ कम्बाइंड हो कर वहाँ उपस्थित अपने सभी ब्राह्मण भाईयों और बहनों को मनसा सकाश देते हुए ये संकल्प करती हूँ कि यहाँ उपस्थित मेरे सभी ब्राह्मण भाई बहन एक दो को सहयोग देते, इस रूहानी यात्रा पर निरन्तर आगे बढ़ते रहें और ऐसे ही आगे बढ़ते और दूसरों को बढ़ाते जल्दी ही सारे विश्व की सभी ब्राह्मण आत्मार्यें संगठित रूप से एकमत होकर बाबा को प्रत्यक्ष करने का कार्य सम्पन्न करें।

»→ _ »→ इसी संकल्प के साथ, स्वयं को अपने प्यारे बाबा की छत्रछाया के नीचे अनुभव करते, *अपने ब्राह्मण सो फरिश्ता स्वरूप में स्थित हो कर, मैं फरिश्ता अब बापदादा के साथ कम्बाइंड होकर ऊपर की ओर उड़ते हुए मधुबन की पावन धरनी पर पहुँचता हूँ जो परमात्मा की अवतरण भूमि है*। जहाँ भगवान साकार में आ कर अपने ब्राह्मण बच्चों से मिलन मनाते हैं, उनकी पालना करते हैं और परमात्म प्यार से उन्हें भरपूर करते हैं। *इस पावन धरनी पर आकर अब मैं देख रहा हूँ करोड़ों ब्राह्मण आत्मार्यें यहां उपस्थित हैं और सभी एक दूसरे के प्रति आत्मा भाई - भाई की रूहानी दृष्टि, वृत्ति रख, अपने रूहानी शिव पिता के प्रेम की लग्न में मग्न हैं*।

»→ _ »→ सभी ब्राह्मण बच्चों के स्नेह की डोर बाबा को अपनी ओर खींच रही है और बच्चों के स्नेह में बंधे भगवान को भी अपना धाम छोड़ कर नीचे आना पड़ता है। मन बुद्धि रूपी नेत्रों से मैं देख रही हूँ, बाबा परमधाम से नीचे आ रहे हैं। *सूक्ष्म वतन से होते हुए अपने आकारी रथ पर विराजमान हो कर बापदादा अब मधुबन की उस पावन धरनी पर हम बच्चों के सामने आ कर उपस्थित होते हैं*। सभी ब्राह्मण बच्चे अब अपने पिता परमात्मा से मिलन मनाने का आनन्द ले रहे हैं। बापदादा अपने एक - एक अमूल्य रत्न को नजर से निहाल कर रहे हैं। एक - एक करके सभी ब्राह्मण बच्चे बाबा के पास जा कर बाबा से दृष्टि और वरदान ले रहे हैं।

»→ _ »→ मैं फरिश्ता भी बापदादा से दृष्टि और वरदान लेने के लिए उनके

पास पहुंचता हूँ और उनकी ममतामयी गोद में जा कर बैठ जाता हूँ। अपनी स्नेह भरी दृष्टि से बाबा मुझे निहार रहे हैं। बाबा की दृष्टि से बाबा के सभी गुण मुझ में समाते जा रहे हैं। *बाबा की शक्तिशाली दृष्टि मुझमें एक अलौकिक रूहानी नशे का संचार कर रही हैं। जिससे मैं फरिश्ता असीम रूहानी आनन्द का अनुभव कर रहा हूँ*। बाबा के हाथों का मीठा - मीठा स्पर्श मुझे बाबा के अपने प्रति अगाध प्रेम का स्पष्ट अनुभव करवा रहा है।

»→ _ »→ मैं बाबा के नयनों में अपने लिए असीम स्नेह देख कर गद गद हो रहा हूँ और साथ ही साथ बाबा के नयनों में अपने हर ब्राह्मण बच्चे के लिए जो आश है कि सभी एक दो को सावधान करते इस रूहानी यात्रा पर सदा आगे बढ़े। *बाबा की इस आश को जान, मन ही मन बाबा को मैं प्रोमिस करता हूँ कि इस रूहानी यात्रा पर एक दो को सावधान करते, मैं निरन्तर आगे बढ़ता ओर बढ़ता रहूँगा*। बाबा मेरे मन के हर संकल्प को पढ़ते हुए, अपना वरदानी हाथ मेरे मस्तक पर रख मुझे सदा विजयी रहने का वरदान दे रहे हैं।

»→ _ »→ अपने सभी ब्राह्मण बच्चों को नजर से निहाल करके, वरदानों से भरपूर करके, अपने मीठे मधुर महावाक्यों द्वारा अपने सभी बच्चों को मीठी समझानी देकर अब बाबा सभी बच्चों को याद की रूहानी यात्रा पर चलने की ड्रिल करवा रहे हैं। *मैं देख रही हूँ सभी ब्राह्मण आत्मायें सेकेंड में अपनी साकारी देह को छोड़ निराकारी आत्मायें बन रूहानी दौड़ में आगे जाने की रेस कर रही हैं। सभी का लक्ष्य इस रूहानी दौड़ में आगे बढ़ने का है और सभी अपने पुरुषार्थ के अनुसार नम्बरवार इस लक्ष्य को प्राप्त कर अपनी मंजिल पर पहुंच रही हैं*।

»→ _ »→ सभी आत्मायें इस रूहानी यात्रा को पूरा कर अब परमधाम में अपने प्यारे बाबा के सम्मुख बैठ उनसे मिलन मना रही हैं। परमात्म शक्तियों से स्वयं को भरपूर कर रही हैं। *शक्ति सम्पन्न बन कर अब सभी आत्मायें वापिस अपने साकारी ब्राह्मण स्वरूप में लौट रही हैं और सभी एक दो को सावधान करते, एक दूसरे को सहयोग देते अपनी रूहानी यात्रा पर निरन्तर आगे बढ़ रही हैं*।

॥ 8 ॥ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

- * मैं रूहानियत द्वारा वृत्ति, दृष्टि, बोल और कर्म को रॉयल बनाने वाली आत्मा हूँ।*
- * मैं ब्रह्मा बाप समान आत्मा हूँ।*

➤ ➤ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

॥ 9 ॥ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

- * मैं आत्मा मेहनत के बजाए मुहब्बत के झूले में झूलती हूँ ।*
- * मैं श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा हूँ ।*
- * मैं निरंतर योगी आत्मा हूँ ।*

➤ ➤ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

॥ 10 ॥ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

* अव्यक्त बापदादा :-

➤ ➤ _ ➤ ➤ सदा शक्तियों को कोई को 4 भुजा, कोई को 6 भुजा, कोई को 8 भुजा, कोई को 16 भुजा. साधारण नहीं दिखाते हैं... यह *भजाये सर्व शक्तियों

का सूचक हैं... इसलिए सर्वशक्तवान द्वारा प्राप्त अपनी शक्तियों को इमर्ज करो... * इसके लिए यह नहीं सोचो की समय आने पर इमर्ज हो जायेगी लेकिन सारे दिन में स्वयं प्रति भिन्न-भिन्न शक्तियाँ यूज करके देखो...

»→ _ »→ सबसे पहला अभ्यास स्वराज्य अधिकार सारे दिन में कहाँ तक कार्य में लगता है? * मैं तो हूँ ही आत्मा मालिक, यह नहीं... मालिक हो के आर्डर करो और चेक करो कि हर कर्मन्द्रियां मुझे राजा के लव और ला में चलते हैं? * आर्डर करें 'मनमनाभव' और मन जाये निगेटिव और वेस्ट थाट्स में, क्या यह लव और ला रहा? आर्डर करें मधुरता स्वरूप बनना है और समस्या अनुसार, परिस्थिति अनुसार क्रोध का महारूप नहीं लेकिन सूक्ष्म रूप में भी आवेश वा चिड़चिड़ापन आ रहा है, क्या यह आर्डर है? आर्डर में हुआ? आर्डर करें *हमें निर्मान बनना है और वायुमण्डल अनुसार सोचो कहां तक दबकर चलेंगे, कुछ तो दिखाना चाहिए... * क्या मुझे ही दबना है? मुझे ही मरना है! मुझे ही बदलना है? क्या यह लव और आर्डर है?

»→ _ »→ इसलिए विश्व के ऊपर, चिल्लाना वाले दुःखी आत्माओं के ऊपर रहम करने के पहले अपने ऊपर रहम करो... अपना अधिकार संभालो। * आगे चल आपको चारों ओर सकाश देने का, वायब्रेशन देने का, मन्सा द्वारा वायुमंडल बनाने का बहुत कार्य करना है... * पहले भी सुनाया की अभी तक जो जो जहां तक सेवा के निमित्त है, बहुत अच्छी की है और करेंगे भी लेकिन अभी समय प्रमाण तीव्रगति और बेहद सेवा की आवश्यकता है...

»→ _ »→ * तो अभी पहले हर दिन को चेक करो 'स्वराज्य अधिकार' कहाँ तक रहा? * आत्मा मालिक होके कर्मन्द्रियों को चलाये... स्मृति स्वरूप रहे की मैं मालिक इन साथियों से, सहयोगियों से कार्य करा रहा हूँ... * स्वरूप नशा रहे तो स्वतः ही यह सब कर्मन्द्रियां आपके आगे जी हाजिर, जी हजूर स्वतः ही करेंगी... * मेहनत नहीं करनी पड़ेगी... आज व्यर्थ संकल्प को मिटाओ, आज संस्कार को मिटाओ, आज निर्णय शक्ति को प्रगट करो... एक धक से सब कर्मन्द्रियां और मन-बुद्धि-संस्कार जो आप चाहते हैं वह करेंगी...

✽ * डिल :- "कर्मन्द्रियों को लव और ला से चलाकर स्वराज्य अधिकारी

बनने का अनुभव*

» _ » अपनी सोई हुई सर्वशक्तियों को पुनः जागृत कर, सर्व शक्ति सम्पन्न स्वरूप बनने के लिए मैं अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो कर, सर्वशक्तित्वान शिव पिता परमात्मा की याद में बैठ जाती हूँ... और सेकण्ड में अशरीरी बन, अपनी साकारी देह से बाहर निकल कर, सर्वशक्तित्वान अपने शिव पिता परमात्मा के पास चल पड़ती हूँ... *मन बुद्धि रूपी नेत्रों से मैं स्पष्ट देख रही हूँ एक ज्योति पुंज भृकुटि सिंहासन से निकल कर, चारों ओर प्रकाश फैलाता हुआ ऊपर आकाश की ओर जा रहा है...* आकाश को पार करके, उससे परे सूक्ष्म लोक को पार करके मैं ज्योति पुंज, प्वाइंट ऑफ लाइट पहुंच गई लाल प्रकाश की दुनिया परमधाम में...

» _ » स्वयं को देख रही हूँ मैं सर्वशक्तित्वान शिव पिता परमात्मा के सम्मुख जिनसे निकल रही सर्वशक्तियों का प्रकाश मुझ आत्मा पर पड़ रहा है... *सर्वशक्तियों के इस प्रकाश के मुझ आत्मा पर पड़ते ही, मेरी सोई हुई शक्तियां पुनः इमर्ज हो रही हैं...* स्वयं को मैं सातों गुणों और अष्ट शक्तियों से सम्पन्न अनुभव कर रही हूँ... सर्वशक्तियों से सम्पन्न हो कर अब मैं परमधाम से नीचे सूक्ष्म लोक में प्रवेश कर रही हूँ और अपने लाइट के सूक्ष्म आकारी शरीर में विराजमान हो कर बापदादा के पास जा रही हूँ...

» _ » अपने सूक्ष्म आकारी शरीर के साथ अब मैं बापदादा के सामने उपस्थित हूँ और देख रही हूँ बापदादा से अलग - अलग शक्ति की अलग अलग - लाइट निकल रही है... एक - एक शक्ति की लाइट जैसे - जैसे मुझ पर पड़ रही है वैसे - वैसे मेरे सूक्ष्म शरीर पर उस शक्ति की सूचक भुजा निर्मित होती जा रही हैं... *देखते ही देखते अष्ट शक्तियों की अष्ट भुजायें मुझमें निर्मित हो गई है और मेरा स्वरूप अष्ट भुजाधारी दुर्गा का बन गया है...* अपने इसी अष्ट भुजाधारी स्वरूप के साथ अब मैं सूक्ष्म लोक से वापिस साकारी लोक में आकर अपने ब्राह्मण स्वरूप में प्रवेश कर रही हूँ...

» _ » अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित हो कर अब मैं अपने अष्ट भुजाधारी स्वरूप को सदैव स्मृति में रख समय और परिस्थिति के अनुसार

उचित समय पर उचित शक्ति का प्रयोग करके सहज ही मायाजीत बन रही हूँ... *अपने सर्वशक्ति सम्पन्न स्वरूप को सदैव इमर्ज रखने के लिए अब मैं हर कर्म स्वराज्य अधिकारी की सीट पर सेट हो कर कर रही हूँ...* "इस शरीर रूपी रथ पर विराजमान मैं आत्मा राजा हूँ" इस स्मृति में रहने से अब हर कर्मेन्द्रिय मेरी इच्छानुसार कार्य कर रही है... *सदा स्मृति स्वरूप रहने से अब हर कर्मेन्द्रिय मेरी साथी और सहयोगी बन गई है...*

»→ _ »→ सदैव मालिक पन के नशे में रहने से सर्व कर्मेन्द्रियां मेरे आगे जी हाजिर, जी हजूर करने लगी है... *अब व्यर्थ संकल्पो, पुराने स्वभाव संस्कारों को मिटाने में मुझे मेहनत नहीं करनी पड़ रही, बल्कि स्वराज्य अधिकारी की सीट पर सेट रहने से परखने और निर्णय करने की शक्ति सहज ही प्रगट हो रही है...* इसलिए परख कर उचित समय पर उचित निर्णय लेने से अब हर कार्य मे मैं सहज ही सफलतामूर्त बन रही हूँ... मन बुद्धि की लगाम अपने हाथ में लेकर अब मैं अपने मन बुद्धि को जहाँ चाहूँ वहाँ लगा कर सर्व प्राप्ति सम्पन्न स्वरूप बन गई हूँ... *अपने इस ब्राह्मण जीवन में कर्मेन्द्रियों को लव और ला से चलाकर स्वराज्य अधिकारी बनने का अनुभव अब मैं निरन्तर कर रही हूँ...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स जरूर दें ।

ॐ शान्ति ॐ